Education Research Training Development
Vasudhaiva Kutumbakam

त्रिनिकेतन समाचार

FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY

खंड-1, संख्या 1 और 2 जनवरी-जून; 2026

प्रधान संपादक: डॉ. अनिला नायर

ग्रामीण विकास: गांव से शुरुआत

डॉ. अनिला नायर द्वारा

भारत की ताकत उसके गांवों में है। **6.65 लाख से अधिक गांवों** के साथ, ग्रामीण भारत देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन की नींव बना हुआ है। स्वतंत्रता से पहले, गांवों पर बहुत कम व्यवस्थित ध्यान दिया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप खराब बुनियादी ढांचा, बार-बार अकाल, अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल और व्यापक गरीबी होती थी। स्वतंत्रता के बाद से, ग्रामीण विकास एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गया है, फिर भी समृद्ध और आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदायों के निर्माण में महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं।

आज भी **भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी** गांवों में रहती है। इसलिए, सतत विकास की शुरुआत प्राकृतिक संसाधनों को मजबूत करके, बुनियादी ढांचे में सुधार, मानवीय क्षमताओं को बढ़ाकर और समावेशी विकास सुनिश्चित करके जमीनी स्तर पर होनी चाहिए। प्रत्येक गांव को एक आदर्श समुदाय बनने की आकांक्षा रखनी चाहिए जहां लोगों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, रोजगार के अवसर, सामाजिक सुरक्षा और स्वच्छ वातावरण तक पहुंच हो।

प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा

भूमि, जल, जंगल और पशुधन ग्रामीण जीवन की रीढ़ हैं। हालांकि, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग, वन आवरण में गिरावट और अस्थिर कृषि प्रथाओं ने मिट्टी के क्षरण और कृषि उत्पादकता को कम करने में योगदान दिया है। जैविक खेती को बढ़ावा देना, उपजाऊ भूमि का संरक्षण करना और किसानों को टिकाऊ कृषि विधियों के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है। कृषि विज्ञान केंद्र और कृषि विश्वविद्यालय जैसे संस्थान तकनीकी मार्गदर्शन और प्रशिक्षण के माध्यम से इन प्रयासों का समर्थन कर सकते हैं।

जल संरक्षण भी उतना ही जरूरी है। तालाबों, तालाबों, नदियों और आर्द्रभूमि जैसे पारंपरिक जल निकायों को नियमित रखरखाव, वर्षा जल संचयन और कुशल सिंचाई प्रणालियों के माध्यम से संरक्षित किया जाना चाहिए। संरक्षित पानी की एक-एक बूंद कृषि को मजबूत करती है और भविष्य की आजीविका को सुरक्षित करती है।

पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए वन महत्वपूर्ण हैं। समुदाय के नेतृत्व वाले वृक्षारोपण अभियान, मौजूदा वनों की सुरक्षा और ग्राम-स्तरीय पर्यावरण समितियां जैव विविधता में सुधार कर सकती हैं और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ वातावरण बना सकती हैं।

ग्रामीण बुनियादी ढांचे को मजबूत करना

गांवों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, पंचायत भवन, सड़कें, पुल, तालाब और अन्य सार्वजनिक संपत्तियां आवश्यक हैं। दुर्भाग्य से, ऐसी कई सुविधाएं उपेक्षा और खराब रखरखाव से ग्रस्त हैं। ग्रामीणों को इन परिसंपत्तियों की सुरक्षा और रखरखाव के लिए जिम्मेदार स्थानीय समितियों का गठन करके सामुदायिक स्वामित्व की एक मजबूत भावना विकसित करनी चाहिए। अच्छी तरह से बनाए रखा गया बुनियादी ढांचा शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, कनेक्टिविटी और आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

सतत विकास के लिए योजना बनाना

सफल ग्रामीण विकास के लिए गांव की वास्तविकताओं की व्यापक समझ की आवश्यकता होती है। एक गांव प्रोफाइल को भूमि, जल, जंगल, पशुधन, बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन, कृषि, सिंचाई, रोजगार, कौशल स्तर, डिजिटल कनेक्टिविटी और सामाजिक संस्थानों का आकलन करना चाहिए। इसे लैंगिक समानता, सामुदायिक भागीदारी, स्थानीय शासन, संघर्ष समाधान तंत्र और जमीनी स्तर के संगठनों की भी जांच करनी चाहिए। इस तरह का आकलन व्यावहारिक और आवश्यकता-आधारित विकास योजनाओं को डिजाइन करने में मदद करता है जो स्थानीय प्राथमिकताओं और आकांक्षाओं को दर्शाते हैं।

निष्कर्ष

भारत का भविष्य इसके गांवों की प्रगति से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। ग्रामीण विकास केवल सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है; इसके लिए ग्रामीणों, स्थानीय संस्थानों, नागरिक समाज संगठनों और विकास एजेंसियों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, बुनियादी ढांचे को मजबूत करके, स्थायी आजीविका को बढ़ावा देकर और सामुदायिक स्वामित्व को प्रोत्साहित करके, गांव विकास और अवसर के जीवंत केंद्र बन सकते हैं। एक समग्र ग्राम विकास दृष्टिकोण न केवल जीवन स्तर में सुधार करेगा बल्कि लचीला, समावेशी और आत्मनिर्भर समुदायों का भी निर्माण करेगा। जब गांव समृद्ध होते हैं, तो राष्ट्र समृद्ध होता है, जिससे ग्रामीण विकास भारत के स्थायी भविष्य की सच्ची नींव बन जाता है।

संपादकीय बोर्ड
एडिटर-इन-चीफ - डॉ. अनिला नायर
संपादकीय बोर्ड के सदस्य

- प्रो. जितेंद्र चौधरी
- श्री. कैलाश नायर
- सुश्री कार्तिका पिल्लई, कार्यकारी निदेशक

सामग्री की सूची

ग्रामीण विकास: गांव से शुरुआत	-	1
कामकाज का सौहार्दपूर्ण माहौल: ट्रिनिकेतन फ़ाउंडेशन फ़ॉर डेवलपमेंट की एक विशेष प्रस्तुति	-	2
त्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट: निरंतर प्रगति की ओर	-	2
अध्यक्ष की व्यावसायिक गतिविधियाँ	-	3
समाचार जो आपके काम आए - प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना	-	3
हमारी भविष्य की योजनाएं	-	3
अनुसंधान संबंधी पहल, अन्य गतिविधियों, आगामी योजनाएँ	-	4
हमारे आदरणीय संरक्षक	-	4

कामकाज का सौहार्दपूर्ण माहौल: ट्रिनिकेतन फ़ाउंडेशन फ़ॉर डेवलपमेंट की एक विशेष प्रस्तुति

एक सामंजस्यपूर्ण कार्य वातावरण हर सफल संगठन की आधारशिला है। आज के तेजी से बदलते पेशेवर परिदृश्य में, नेतृत्व अब काम को निर्देशित करने या लक्ष्यों को प्राप्त करने तक ही सीमित नहीं है। यह विश्वास बनाने, सहयोग को बढ़ावा देने और एक ऐसा कार्यस्थल बनाने के बारे में है जहां हर व्यक्ति मूल्यवान, सम्मानित, सुना और प्रेरित महसूस करे। जब कर्मचारी अपनेपन और उद्देश्य की भावना का अनुभव करते हैं, तो उन्हें अपने ज्ञान, रचनात्मकता और कौशल का पूरा योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे अधिक संगठनात्मक सफलता मिलती है।

असरदार लीडरशिप सहयोग, खुली बातचीत और आपसी सम्मान के कल्चर को बढ़ावा देती है। यह मानती है कि लोग ही ऑर्गनाइज़ेशन की सबसे बड़ी संपत्ति हैं और काम का अच्छा माहौल व्यक्ति और टीम, दोनों की परफॉर्मेंस को बेहतर बनाता है। जब लीडर टीमवर्क को बढ़ावा देते हैं, अलग-अलग नज़रियों की सराहना करते हैं और कर्मचारियों के विकास में मदद करते हैं, तो वे ऐसा माहौल बनाते हैं जहाँ प्रोडक्टिविटी, इनोवेशन और भलाई, सब एक साथ फलते-फूलते हैं।

प्रभावी नेतृत्व के परिभाषित गुणों में से एक भावनात्मक बुद्धिमत्ता है - दूसरों के साथ सहानुभूति रखते हुए भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता। स्पष्ट और दयालु संचार भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जो रिश्तों को मजबूत करता है, गलतफहमियों को कम करता है और टीम के भीतर आत्मविश्वास पैदा करता है। दूरदर्शी सोच नेताओं को दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाती है जबकि दूसरों को एक सामान्य उद्देश्य के लिए काम करने के लिए प्रेरित करती है। निर्णायकता और जवाबदेही समय पर कार्रवाई, जिम्मेदार निर्णय लेने और नेतृत्व में ईमानदारी सुनिश्चित करती है।

लगातार विकसित हो रही दुनिया में, अनुकूलनशीलता और निरंतर सीखना आवश्यक नेतृत्व गुण बन गए हैं। जो नेता परिवर्तन को अपनाते हैं, नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं, और अपनी टीमों के विकास में निवेश करते हैं, वे लचीले संगठन बनाते हैं जो भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं।

ट्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट में, हम मानते हैं कि सामंजस्यपूर्ण कार्यस्थल विश्वास, सहानुभूति, सहयोग और साझा जिम्मेदारी पर बने हैं। इन मूल्यों का पोषण करके, संगठन एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जहां प्रत्येक व्यक्ति फलता-फूलता है, उत्पादकता और रचनात्मकता बढ़ती है, और सतत विकास एक साझा उपलब्धि बन जाता है। एक सामंजस्यपूर्ण कार्यस्थल केवल एक संगठनात्मक लक्ष्य नहीं है - यह स्थायी सफलता और सार्थक सामाजिक प्रभाव की नींव है।

ट्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट: निरंतर प्रगति की ओर

जागरूकता कार्यक्रम। 13 जून, 2026 को फाउंडेशन के स्वयंसेवक द्वारा मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले के ब्लॉक टीकमगढ़ के श्यामपुरा गांव में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतिभागियों की कुल संख्या 26, 15 पुरुष और 11 महिलाएं थीं। चर्चा के मुख्य बिंदु थे: पीने के पानी की कमी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य के मुद्दे आदि।

चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि ग्रामीण मिलकर जिला प्रशासन से अनुरोध करेंगे कि वे उनकी दलीलों पर विचार करें और उन्हें पीने के पानी की आपूर्ति के लिए हैंडपंप उपलब्ध कराएं। यह भी निर्णय लिया गया कि इसी तरह का कार्यक्रम अन्य गांवों में भी आयोजित किया जाना चाहिए।

- **विश्व पर्यावरण दिवस** मनाया गया। हमारे एक माननीय सदस्य श्री आर. शिरोमणि सिंह राजपूत, ग्राम पंचायत प्रधान, भूप नगर, दुनारा, मध्य प्रदेश में विश्व

पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण करते हुए। दुनिया भर के लोगों के जीवन और आजीविका को प्रभावित करने वाले जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए, फाउंडेशन ने पेड़ लगाकर दिवस मनाया और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के सभी लोगों की जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता भी पैदा की।

- **पर्यावरण संरक्षण के लिए टूलकिट।** इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले बच्चों, शिक्षकों और अन्य व्यक्तियों के लिए पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के लिए एक टूलकिट तैयार करने की योजना बनाई गई है।

पर्यावरण के चार स्तंभ

पर्यावरण को मोटे तौर पर चार परस्पर जुड़े घटकों में वर्गीकृत किया गया है, जिन्हें आमतौर पर पर्यावरण के चार स्तंभों के रूप में जाना जाता है:

- **लिथोस्फीयर-पृथ्वी** की ठोस बाहरी परत, जिसमें भूमि, चट्टानें, मिट्टी और खनिज शामिल हैं।
- **जलमंडल** - महासागरों, नदियों, झीलों, ग्लेशियरों, भूजल और अन्य जल संसाधनों सहित पृथ्वी पर सभी जल निकाय।
- वायुमंडल-पृथ्वी के चारों ओर गैसों की परत जो जीवन को बनाए रखती है और जलवायु को नियंत्रित करती है।
- **बायोस्फीयर-जीवन** का वैश्विक क्षेत्र जिसमें सभी जीवित जीव (पौधे, जानवर, सूक्ष्मजीव और पर्यावरण के साथ उनकी बातचीत) शामिल हैं।

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) और पर्यावरणीय स्थिरता

2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाए गए सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में 2030 तक सतत विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 17 वैश्विक लक्ष्य शामिल हैं। उनमें से, निम्नलिखित लक्ष्य सीधे पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिक स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करते हैं:

एसडीजी 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता
एसडीजी 13: जलवायु कार्रवाई
एसडीजी 14: पानी के नीचे जीवन
एसडीजी 15: भूमि पर जीवन

ये लक्ष्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पारिस्थितिक तंत्र की सुरक्षा, जल संसाधनों के सतत प्रबंधन, जलवायु लचीलापन और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए स्थलीय और समुद्री जैव विविधता के संरक्षण पर जोर देते हैं।

- **भूप नगर का नया चेहरा**। पिछली तिमाहियों के दौरान प्रधान द्वारा भूप नगर में खेल, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। तस्वीरें इन गतिविधियों को दर्शाती हैं।
- त्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट के स्वयंसेवक विभिन्न गतिविधियों में लगे हुए थे, जैसे:
    - ➢ सामान्य रूप से लोगों और विशेष रूप से श्रमिकों के साथ बातचीत करके उन्हें जानकारी देना और सत्र आयोजित करना; श्रम कानून, जीवन कौशल, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नेतृत्व कौशल।

अध्यक्ष की व्यावसायिक गतिविधियाँ

त्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट के अध्यक्ष ने **वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा, उत्तर प्रदेश** में संचार कौशल, श्रम संहिता के लिए संचार कौशल **और** तनाव प्रबंधन **पर** प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए। इंटरैक्टिव सत्रों ने प्रभावी संचार को मजबूत करके, श्रम कानून की समझ में सुधार करके और व्यावहारिक तनाव प्रबंधन तकनीकों को बढ़ावा देकर प्रतिभागियों की दक्षताओं को बढ़ाया। कार्यक्रम को अच्छी तरह से प्राप्त किया गया और प्रतिभागियों के बीच कार्यस्थल दक्षता, आत्मविश्वास और समग्र विकास के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

➢ **स्वास्थ्य और मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम।** अपनी सामुदायिक स्वास्थ्य पहल के हिस्से के रूप में, त्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट ने मई 2026 के

दौरान गौतम पुरी, अलीगांव, बदरपुर, नई दिल्ली में किशोरियों के लिए एक स्वास्थ्य और मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। हमारे समर्पित स्वयंसेवकों द्वारा संचालित, कार्यक्रम मासिक धर्म स्वच्छता, व्यक्तिगत स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था। इंटरएक्टिव चर्चाओं ने प्रतिभागियों को स्वस्थ प्रथाओं को अपनाने, मिथकों को दूर करने और आत्मविश्वास पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे युवा लड़कियों को उनके स्वास्थ्य, कल्याण और समग्र विकास के लिए सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाया जा सके।

समाचार जो आपके काम आए - प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना

भारत **सरकार द्वारा 17 सितंबर 2023** को शुरू की गई **प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना**, कारीगरों और शिल्पकारों की आजीविका में सुधार करते हुए भारत के पारंपरिक शिल्प कौशल को संरक्षित करने की एक प्रमुख पहल है। यह योजना 18 चिन्हित पारंपरिक व्यवसायों में लगे व्यक्तियों को व्यापक सहायता प्रदान करती है, जिससे वे अपने कौशल को उन्नत करने, आधुनिक तकनीक को अपनाने और अपनी आय में सुधार करने में सक्षम होते हैं।

इस कार्यक्रम में बढ़ई, लोहार, ताला बनाने वाले, मूर्तिकार, सुनार, कुम्हार, मोची, राजमिस्त्री, टोकरी और कॉयर बुनकर, नाई, धोबी, दर्जी, माला बनाने वाले, पारंपरिक खिलौना निर्माता, नाव निर्माता, मछली पकड़ने के जाल बनाने वाले और अन्य जैसे व्यवसाय शामिल हैं। ये व्यापार भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं और लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करना जारी रखते हैं।

आवेदकों की आयु **18 वर्ष या उससे अधिक होनी** चाहिए और अधिसूचित पारंपरिक व्यवसायों में से किसी एक में लगे हुए होने चाहिए। यह योजना **कारीगरों को अपने उद्यमों का विस्तार करने में मदद करने के लिए** बुनियादी और उन्नत कौशल प्रशिक्षण, **आधुनिक उपकरण खरीदने के लिए** ₹15,000 तक **की वित्तीय सहायता और** संपार्श्विक-मुक्त व्यवसाय विकास ऋण प्रदान करती है।

कौशल विकास, वित्तीय सहायता, आधुनिक उपकरण और किफायती ऋण के संयोजन से, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना* पारंपरिक कारीगरों को सशक्त बनाती है, भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करती है, स्वरोजगार को बढ़ावा देती है और समावेशी और सतत आर्थिक विकास में योगदान देती है।

** विवरण के लिए, कृपया देखें: पीएम विश्वकर्मा: कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश। भारत सरकार। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय।*

- हमारी भविष्य की योजनाएँ -

त्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट में, हम जमीनी स्तर के संस्थानों को मजबूत करने, सामाजिक सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देने और समावेशी और सतत विकास के लिए साक्ष्य-आधारित ज्ञान उत्पन्न करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वर्ष की आगामी तिमाहियों के दौरान, फाउंडेशन निम्नलिखित कार्यक्रमों और पहलों को शुरू करने का प्रस्ताव करता है।

➢ पंचायती राज संस्था के पदाधिकारियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम।

फाउंडेशन का गांवों के समूह में पंचायती राज संस्थाओं **(पीआरआई)** के पदाधिकारियों के लिए एक क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है। यह कार्यक्रम स्थानीय स्वशासन संस्थानों की क्षमता को मजबूत करने और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में उनकी प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

उद्देश्य: ग्रामीण विकास और सामुदायिक सशक्तिकरण में पंचायती राज संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करना।

लक्ष्य

- पीआरआई पदाधिकारियों को उनकी संवैधानिक भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और कार्यों से परिचित कराना।
- ग्रामीण समुदायों के लिए प्रासंगिक विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों, कल्याणकारी योजनाओं और विकास पहलों के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- प्रभावी स्थानीय प्रशासन के लिए पीआरआई सदस्यों के नेतृत्व, निर्णय लेने और शासन कौशल को मजबूत करना।

➢ **सामाजिक सुरक्षा पर ओरिएंटेशन प्रोग्राम।**

समाज के कमजोर वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा के महत्व को पहचानते हुए, फाउंडेशन उपलब्ध **सामाजिक सुरक्षा उपायों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने और अधिक सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए** सामाजिक सुरक्षा पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना रहा है।

उद्देश्य: व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों स्तरों पर सामाजिक सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना।

लक्ष्य

- सामाजिक सुरक्षा पहलों को मजबूत करने के लिए संसाधन जुटाने के लिए रणनीतियों के साथ प्रतिभागियों को परिचित कराना।
- समाज के विभिन्न वर्गों के लिए विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और उनके लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- जमीनी स्तर पर समूहों के गठन की सुविधा के लिए जो सामाजिक सुरक्षा जागरूकता और समुदाय-आधारित समर्थन तंत्र को बढ़ावा दे सकते हैं।

- अनुसंधान संबंधी पहल -

फाउंडेशन ने घरेलू श्रमिकों और गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों पर उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और सामाजिक सुरक्षा आवश्यकताओं को समझने के लिए सूक्ष्म अनुसंधान परियोजनाओं की योजना बनाई है।

- अन्य गतिविधियों -

- ग्राम श्यामपुर, मध्य प्रदेश का अध्ययन दौरा।
- किसी पंचायत के कार्यकरण का निरीक्षण करने के लिए उसका अध्ययन करना।
- विकास व्याख्यान श्रृंखला के लिए त्रिनिकेतन फाउंडेशन का संगठन।

- आगामी योजनाएँ -

इन पहलों के माध्यम से, त्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट ग्रामीण समुदायों के साथ अपने जुड़ाव को गहरा करना, स्थानीय शासन को मजबूत करना, सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा देना और समावेशी और सतत विकास में योगदान देने वाले सार्थक अनुसंधान करना चाहता है। फाउंडेशन शिक्षा, क्षमता निर्माण, अनुसंधान और सहयोगात्मक कार्रवाई के माध्यम से समुदायों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित है, जिससे एक अधिक न्यायसंगत और लचीला समाज को बढ़ावा मिलता है।

- हमारे आदरणीय संरक्षक -

पिछले कई महीनों में, हमारे संरक्षक समर्थन के दृढ़ स्तंभ बने हुए हैं, अपने उदार योगदान, प्रोत्साहन और अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से हमारे मिशन को मजबूत कर रहे हैं। उनके निरंतर विश्वास ने हमें अपनी पहल को आगे बढ़ाने और अपने समुदायों की अधिक प्रभावी ढंग से सेवा करने में सक्षम बनाया है। हम अपनी ईमानदारी से आभार व्यक्त करते हैं और नीचे उनकी तस्वीरों और नामों की विशेषता के द्वारा उनके बहुमूल्य समर्थन को स्वीकार करने के लिए सम्मानित महसूस कर रहे हैं:

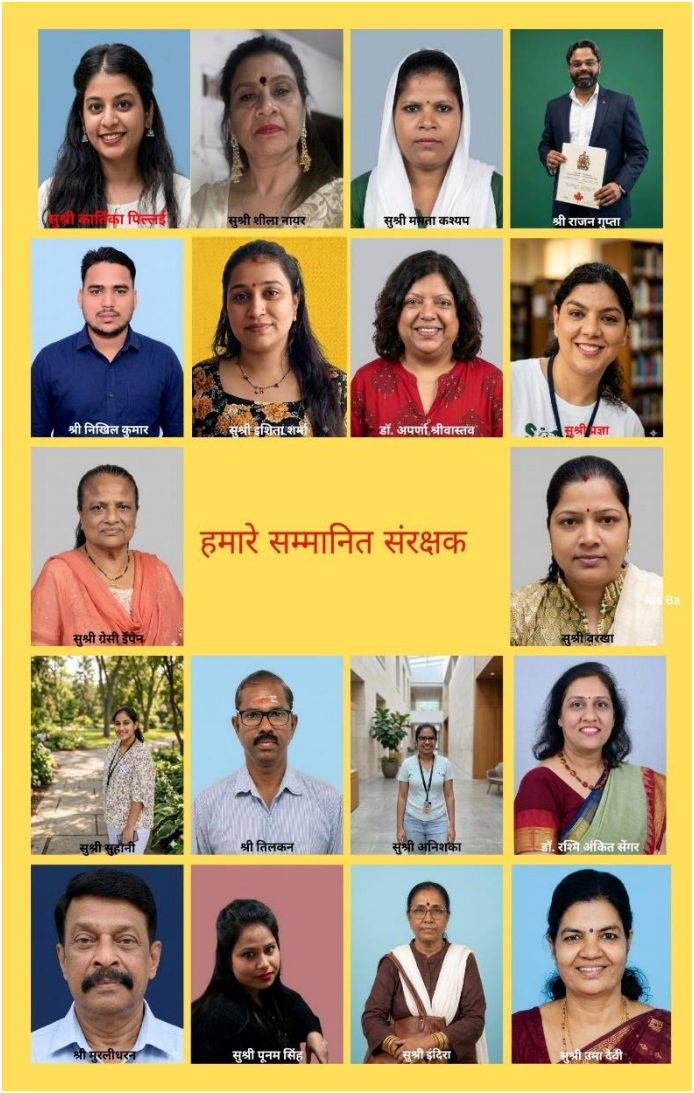

- Get in touch with us -

Mobile No.: 011-96676 48959
Email ID: triniketanfoundation2018@gmail.com
Website: https://triniketanfoundation.org.in/

The details of our bank accounts are as under:

Axis Bank Ltd, R.K. Puram Branch, Munirka, New Delhi-110067, Account No. 923010000628304, IFS Code UTIB0003532

Printed at: JRP Enterprises, 248/B, Rama Market, Munirka, New Delhi-110067